ISSN No. 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 3, अंक : 1, अप्रैल 2016

पुरातन पंजाब के अप्रचलित लोक नृत्य

पुष्पेन्दर
एसोसिएट प्रोफेसर, गवर्नमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, पटियाला

सार-संक्षेप

लोक नृत्य आम लोगों द्वारा आम लोगों के लिए पनपा है जिसमें आम लोगों की प्रादेशक भाषा का ज़िक्र होता है। इसलिए इनको समझना आसान होता है ये अपनी स्वछंद प्रकृति से विकसित होते हैं। भारत के उत्तरी भाग के सबसे अमीर प्रांत पंजाब के दो लोक नृत्य भांगड़ा व गिद्दा विश्व प्रसिद्ध हैं। पर पंजाब के और लोक नृत्य जो बेहद मनमोहक व लयात्मक छवि पेश करते हैं अब लुप्त होने की कगार पर हैं, उन पर रौशनी डालना व उनकी छवि बरकरार रखना अत्यंत आवश्यक है ताकि इन नृत्यों से अपनी भारतीय संस्कृती व सभ्यता की धरोहर को बचाया जा सके। प्रस्तुत शोध-पत्र में कम प्रचलित लोक नृत्य सम्मी, ढ़ोला, झूमर, छुपाया से संबंधित जानकारी दी गई है। ताकि विद्यार्थियों को इसकी विधिवत ज्ञानात्मक व प्रयोगात्मक शिक्षा प्रदान की जा सके।

मुख्य शब्द : अप्रचलित लोक नृत्य, सम्मी लोक नृत्य, वेश-भूषा, झूमर नृत्य, छुपाया नृत्य।

शोध-पत्र

भारत विश्व स्तर पर सबसे अधिक परंपरावादी देश माना जाता है जिसमें सबसे अधिक शास्त्रीय विधाएँ व लोक कलाएँ पाई जाती हैं। लोक संगीत, लोक धारा, लोक नृत्य ये सब लोक कलाओं के अंतरगत आते हैं। लोक नृत्य आम लोगों द्वारा आम लोगों के लिए पनपा है जिसमें आम लोगों की पेशकारी, आम लोगों के लिए, आम लोगों द्वारा की जाती है, इसमें प्रादेशिक भाषा का जिक्र होता है। इस लिए इनको समझना आसाना होता है ये अपनी-अपनी परंपराओं, रिवाजों से पोषित होते हैं। अपनी-अपनी भोगौलिक परिस्थिती व सांस्कृतक प्रकृति से विकसित होते हैं। भारत में सबसे अधिक लोक नृत्य पाए जाते हैं जो प्रांतक स्तर पर होते हैं। पंजाब का नृत्य भंगडा व गिद्दा विश्व प्रसिद्ध हैं। पर पंजाब के और लोक नृत्य जो बेहद मनमोहक व लयात्मक छवि पेश करते हैं अब लुप्त होने की कगार पर हैं, उन पर रौशनी डालना व उनकी छवि बरकरार रखना अत्यंत आवश्यक है तांकि इन नृत्यों से अपनी भारतीय संस्कृति व प्राचीन सभ्यता की अमीर धरोहर को बचाया जा सके। इस उद्देश्य को आगे रखकर ही हम पंजाब के कम प्रचलित लोक नृत्य सम्मी, ढोला, झूमर, छुपाया से संबंधित जानकारी देने का प्रयास किया है। तांकि विद्यार्थियों को इसकी विधिवत ज्ञानात्मक व प्रयोगात्मक शिक्षा प्रदान की जा सके।

पुरातन पंजाब के अप्रचलित लोक नृत्य

भारत देश सांस्कृतिक देश है। भारत देश के नृत्यों में लय व ताल की प्रधानता होती है। ऐतिहासिक दृष्टि से भारत 15 अगस्त, 1947 को आज़ाद हुआ और पंजाब अर्थात् पूर्वी पंजाब और पश्चिमी पंजाब। उत्तरी भारत के सबसे अमीर प्रांत पंजाब के भी दो भाग हो गये—पूर्वी पंजाब (भारत) और पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान)। इस विभाजन का सबसे बुरा प्रभाव पंजाब की संस्कृति, सभ्यता, लोकायान, लोकधारा पर पड़ा। पंजाब की संस्कृति बिखर गई। पंजाब सप्त सिन्धु (सात नदियों का देश) से पंजाब (पाँच नदियों के देश और फिर तीन नदियों का देश बन गया) क्योंकि आज़ादी उपरांत इसमें से दो और प्रदेशों को अलग करके फिर अलग से दो प्रांत विकसित किए गए जिनके नाम क्रमश: ''हिमाचल प्रदेश'' और ''हरियाणा'' हैं। इस तरह पंजाब को दोहरे तिहरे विभाजनों का सामना करना कठिन हो गया। पंजाब के लोक संगीत और लोक नृत्य अपनी अलग अलग जगह पर पनपते रहे। क्योंकि नृत्य ''अंगों और भावों की सौंदर्यमयी भाषा है। ''[1] भारतीय पंजाब के लोक संगीत और लोक नृत्य में आधुनिकता का अधिक समावेश हो जाने से विद्वानों को इसमें हो रहे परिवर्तनों से नुकसान का आभास हुआ तथा यह आवश्यक हो गया कि इसके प्राचीनतम रूप को कैसे वापिस प्राप्त किया जाए। यहाँ हम पंजाब के लोक नृत्यों से संबंधित चर्चा करेंगे क्योंकि ''नृत्य का मूल मंतव दर्शकों में रस का संचार करना होता है।''[2]

प्रचलित देसी लोक नृत्य—भारतीय पंजाब के इलाके में सिर्फ दो ही लोक नृत्य प्रचलित थे भंगड़ा और गिद्दा। इन दोनों का विकास पंजाब में इतना है कि दूसरे प्रांत भी भंगड़े की चमत्कारिता से अछूते नहीं रहे। आधुनिक लोक गायको ने भंगड़े पर इतनी शौहरत हासिल की है व इसे विश्व पटल पर सबसे अधिक स्थापित, भारतीय लोक नृत्य बना दिया। भारतीय पंजाब का दूसरा लोकप्रिय नृत्य गिद्दा है जो अपनी विकास क्रिया को प्रचारित कर आगे बढ़ रहा है। यह दोनों नृत्य उत्साहित लोकनृत्य हैं। मुख्य प्रधान लोक जानकारी के लिए यह बात जानना अत्यंत आवश्यक है कि पंजाब के सबसे अधिक लयात्मक, खूबसूरत

नृत्य पाकिस्तान पहुँच गये और वहाँ पनपते रहे और भारतीय पंजाब दो नृत्यों तक ही सिमट कर रह गया। फिर कुछ लोक नर्तकों ने इस को वापिस लाने की जिम्मेदारी उठाई। वहाँ जा के नृत्य सीखे गये और यहाँ आ कर वर्कशाप लगाई गई। विद्यार्थियों और अध्यापकों को इसकी विधिवत शिक्षा प्रदान की गई। इस महान खोज का श्रेय सबसे अधिक पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला को जाता है। जिस ने इस काम का जिम्मा उठाया और पुराने नृत्य विशेषज्ञ सरदार पोखर सिंह (स्वर्गीय) व सरदार गुरचरन सिंह से बहुत कुछ हासिल करके उसका प्रचार भारतीय पंजाब में किया। इस तरह कठिन प्रयत्नों से ये जो लोक नृत्य भलीभांति हमें सीखने को मिले (जिनका संबंध पाकिस्तानी पंजाब से है) वो पुरातन पंजाब के लोक नृत्य हैं। हम इस ज्ञानवर्धन को निम्न प्रकार से प्रकट कर सकते हैं :

(1) सम्मी लोक नृत्य : सम्मी पुरातन पंजाब का सबसे लयात्मक और कोमल नृत्य है। जिसमें एक प्रेम कहानी छिपी हुई है। सम्मी 'संदलबार' की सुंदरी थी जो गाँव में आये परदेसी मारवाड़ी युवक ''ढोला'' को प्यार करती थी। ढोला के घर वापिस जाने पर वो उसकी जुदाई ना बर्दाशत कर सकी। वो सारा दिन कुएँ से ताज़ा पानी भर के, मीठी रोटियाँ बना के उसका इंतजार करती थी। उसकी सहेलियाँ उसका साथ देती थी। सम्मी विछोह में गीत रचती जाती और नाचती जाती, सखियों को नचाती जाती, कुछ ही दिनों में सम्मी बीमार हो कर मृत्यु को प्राप्त हो गई। कुछ दिनों बाद ढोला भी शहतूत के पेड़ की कोपलें फूटने पर वापिस आ गया पर सम्मी को ना पाकर वो भी सम्मी की समाधि पर सिर पटक कर प्राण आहुति दे गया उन दोनों की समाधियों पर आज भी मेला लगता है और सम्मी की नृत्य क्रियाओं को भलीभांति किया जाता है। इस नृत्य में चुटकी-ताली का प्रधानता और ढोल की थाप जरूरी है। इसमें सम्मी के पानी भरने से लेकर, रोटी पकाने, दीया जलाने की क्रियाओं को दिखाया जाता है। यह पूर्ण रूप से स्त्री नृत्य है इसका गाना ऐसे है :

1. सम्मी मेरी वाण, मैं वारी मेरी सम्मीए,
   सम्मी तेरे उतों बलिहारी मेरे ढोलणा॥
2. गिण गिण लावां रोटियाँ नी सम्मी ये,
   लय लय लावाँ पूर (लप लप लावाँ पूर)
   नी सम्मीए, स्वावणे वाला दूर नी सम्मीये।

वेषभूषा :

इस नृत्य में लड़कियाँ दो चोटियाँ, मीडीयाँ, परांदियों के साथ करती है। घघरी पर चांदी रंगा गोटा लगाती है। रंगीन चोली और कोडियों वाला दुपट्टा लेती हैं। पैरों में पायल और चाँदी रंगे गहने पहनती हैं। यह नृत्य अत्यंत खूबसूरत है।

2. ढोला-नृत्य : यह पात्र ''ढोला'' से संबंधित नृत्य है। जिसे युवक करते हैं। ढोले की समाधि के इर्द-गिर्द वृत्ताकार रूप में खड़े हो के धीमे से तेज़ गति में चलते हुए उसे लय की चर्म सीमा पर पहुँचाया जाता है। इसमें सलवार, पठानी पगड़ी और कफों वाला कुर्त्ता, मुल्तानी जूतियाँ पहनी जाती हैं। वाद्य ढोल, डमरू, चिमटा और अल्गोज़ा बजते हैं। सम्मी के विपरीत इसमें हल्के रंग के वस्त्र पहने जाते हैं। इस का गीत है:

1. ढोला वे ढोला - हाय ढोला, ढोला वे रावी वालड़िया
2. आजा दोवें नच्चीये वे ढोला।
   दु:ख सुख फोलीये वे ढोला। वे ढोला॥

झूमर नृत्य : यह 'ढोला' से मिलता जुलता है, इसकी वेशभूषा और वाद्य तथा संगीत एक जैसा है पर इस नृत्य में बहुत ही कलात्कता है। झूम-झूम कर करने से ही इसका नाम झूमर पड़ गया। इस नृत्य में लड़के लड़कियों की नक्ल करते हुए कभी चक्करों में कभी युगल हो कर नृत्य करते हैं। चुटकियों का और आँखों की मटक का अधिक सहारा लिया जाता है। इसका एक गीत है :

1. रंग चै के परात विच पै गया,
   धुपे मैं पकाईयाँ रोटियाँ, अश्के!
2. मैनुँ घड़ा चुका के जावी, जावीं
   छोरा वे मुल्तान दिया (दे दिया)

छुपाया नृत्य : इसका स्वरूप कश्मीर में भी मिलता है। यह धार्मिक नृत्य है जिसे मस्तों का, मलंगों का नाच भी कहा जाता है। सूफी संत लोग अल्लाह की मस्ती में चिमटा, तूँबा, रबाब, डमरू लेकर मस्ती में ये नृत्य करते हैं। इसका नाम सूफाया (सूफीया) से ही छुपाया पड़ा है। लम्बा चोला पहना जाता है। सिर पर पीछे की तरफ कपड़ा बांधा जाता है। ये उपरोक्त चार नृत्यों से ही पश्चिमी पंजाब की शोभा है और इन्हीं से पंजाब की संस्कृति और लोकधाराएँ परिपूर्ण होती हैं। हम आभारी हैं, उन साहित्यकारों और विद्वान कलाकारों के जिन्होंने हमें हमारी इस खोई हुई दूरगामी संस्कृति को हम तक दोबारा पहुँचाने की कृपा की। ''15 अगस्त, 1947 को भारत के स्वतंत्र होने के बाद आज तक के काल में भारतीय समाज में नृत्य का बहुत प्रचार-प्रसार हुआ।''[3] स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में नृत्य कला शिक्षा के लिए अलग-अलग संस्थान स्थापित किए गए व स्कूलों, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में इसे एक विषय के साथ-साथ डिग्री के रूप में भी आरंभ किया गया जो कि भारतीय संस्कृति को संभालने हेतु सबसे शक्तिशाली प्रयास है। आजकल भारतीय नृत्य कोरियाग्राफी, सिनेमा, युवक मेलों वं अंतर क्षेत्रीय मुकाबलों के माध्यम से बहुत आगे बढ़ रहे हैं, चाहे इनमें आजकल आधुनिकता व पश्चिमी सभ्यता का समावेश हो गया है पर फिर भी बहुत हद तक लोक नृत्य अपनी पुरातन संस्कृति व प्रादेशिक भाषा को संभाले हुए हैं। आज की युवा पीढ़ी को पारम्परिक नृत्य शिक्षा की विधिवत् शिक्षा देने से अपने देश की आमीर विरासत संभालने की तरफ उनका ध्यान खींचा जा सकता है। इस आशाजनक उद्देश्य के लिए सभी कलाप्रेमियों का निष्ठा से यत्न करना अति आवश्यक बन जाता है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. देवेन्द्र कौर, संगीत रूप-2, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला
2. सिम्मी, मिटु, तार संचार, पृ. 16
3. दाधीय, पुरु, कत्थक नृत्य शिक्षा-2, सरल आटो प्रेस, लखनऊ, पृ. 34